साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Earth provides enough to satisfy every man's needs, but not every...

वर्ष : 8, अंक : 29 | (प्रति बुधवार), इन्दौर, 8 मार्च 2023 से 14 मार्च 2023 | पेज : 8 | कीमत : 3 रुपये

सेहत और पर्यावरण के लिए फायदेमंद है होली, बस अपनाने होंगे कुछ खास उपाय

नई दिल्ली। होली का त्योहार नजदीक आते ही आसपास का माहौल रंगों से सराबोर महसूस होने लगता है. होली के दिन लोग एकदूसरे को रंग और गुलाल लगाकर जश्न मनाते हैं. वहीं, देशभर में लोग एकदूसरे को रंगभरे पानी से तरबतर कर देते हैं. वहीं, पर्यावरण को बचाने की मुहिम में जुटे लोगों को हालिका दहन के लिए काटे जाने वाले हरे पेड़ों और होली खेलने में इस्तेमाल होने वाले पानी को बचाने की चिंता सताने लगती है. इसके उलट लोग सिर्फ एक दिन की होली होने का तर्क देते हैं. दोनों अपनी-अपनी जगह सही हैं. भारत में हर त्योहार को पूरे जोश से मनाने की परंपरा है. ऐसे में अगर हम थोड़ा सी सावधानी बरतें तो रंगों का ये त्योहार हमारी और पर्यावरण दोनों की सेहत के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है.

होली का त्योहार इस बार 8 मार्च 2023 यानी बुधवार को है. इस समय बाजारों में त्योहार की खरीदारी जोरों पर है. हर तरफ गुलाल के ढेर, तरह तरह के रंग और पिचकारियां नजर आ रही हैं. बच्चों की होली तो अभी से शुरू हो चुकी है. ये त्योहार तन और मन में अलग ही ऊर्जा का संचार करता है. देशभर में अलग-अलग तरह से होली मनाई जाती है. लोग अपनी-अपनी परंपराओं और प्रथाओं के हिसाब से होली मनाते हैं. ये त्योहार जितना हमारी परंपरा और आस्था से जुड़ा है, उतना ही हमारी सेहत से भी इसका सरोकार है. जरूरी है कि हम सही तरीके से होली का जश्न मनाएं.

सेहत के लिए कैसे फायदेमंद है रंगों का त्योहार

देश में पहले फूलों के रंगों से होली खेली जाती थी. समय के साथ अलग-अलग तरह से होली के रंग बनाए जाने लगे. फिर कैमिकल्स का इस्तेमाल कर रंग बनाए गए, जिनसे लोगों को स्किन और आंखों से जुड़ी समस्याएं भी हुईं. जनरल फिजीशियन डॉक्टर मोहित सक्सेना का कहना है कि अगर हम फूलों के रंग से होली खेलते हैं तो इसका हमारे मन और शरीर पर बहुत अच्छा असर पड़ता है. उनके मुताबिक, अगर हम फूलों के रंग से होली खेलेंगे तो स्किन के लिए भी फायदेमंद होगा. वहीं, कैमिकल कलर्स से होली खेलने से हमारी स्किन और आंखों में इरिटेशन की दिक्कत होती है. वहीं, अस्थमा के मरीजों के लिए रंग काफी नुकसान पहुंचा सकते हैं. इसके उलट अगर वे फ्रेगरेंस इंटॉलरेंट नहीं हैं तो फूलों के रंग से उन्हें कोई दिक्कत नहीं होगी.

डॉ. सक्सेना कहते हैं कि अगर हम फूलों के रंगों से होली खेलते हैं तो हमारी स्किन गर्मियों की तपिश के लिए तैयार हो जाती है. वह कहते हैं कि होली का त्योहार साल में एक बार आता है. लिहाजा, पूरे जोश के साथ पानी से एकदूसरे को भिगाएं. लेकिन, पर्यावरण की चिंता को कम करने के लिए पानी का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करने से बचना चाहिए. वहीं, हालिका दहन के लिए हरे पेड़ों को काटने के बजाय लोगों को अपने घरों में पड़ी बेकार लकड़ी का इस्तेमाल करना चाहिए. अगर ऐसा नहीं हो पाता तो चंदा इकट्ठा करके लकड़ी की टाल से होली तैयार करनी चाहिए. ध्यान रखें कि हरे पेड़ धरती और इंसानों के लिए जीवनदायनी ऑक्सीजन छोड़ते हैं. साथ ही गर्म हवाओं को रोकने का काम भी करते हैं. दिल्ली के एलएनजेपी अस्पताल में डॉ. नरेश कुमार का कहना है कि होलिका दहन के समय पैदा होने वाली गर्मी के कारण वातावरण में कुछ दूरी तक मौजूद बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं. वह कहते हैं कि सांस से जुड़े मरीजों को गुलाल से होली खेलने से बचना चाहिए. वह कहते हैं कि अगर किसी को त्वचा की एलर्जी और श्वांस से जुड़ी समस्याएं हैं तो बेहतर होगा वे होली ना खेलें. लेकिन, अगर खेलना ही है तो रंगों के बजाय केवल पानी से होली खेल सकते हैं. इससे वे होली का आनंद भी ले पाएंगे और उनको दिक्कत भी नहीं होगी. डॉ. सक्सेना कहते हैं कि होली का त्योहार ऐसे मौसम में आता है, जब ना तो बहुत ठंड होती है और ना ही ज्यादा गर्मी होती है. करीब-करीब पूरे देश में एक जैसा मौसम होता है. ये मौसम सर्दी के आलस को भी दूर करता है. लेकिन, जिन लोगों को सर्दी से जुड़ी समस्याएं रहती हैं, वे पानी के बजाय गुलाल से होली खेलें. होली स्पेशल, होली, होली का त्योहार, क्या स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है होली, क्या पर्यावरण के लिए होली फायदेमंद है, होली कैसे मनाएं, होलिका दहन का सही समय क्या है, भक्त प्रह्लाद, हिरण्यकश्यप, भगवान विष्णु, पानी बचाएं, पर्यावरण को सुरक्षित रखें, होली पर ना करें पानी की बर्बादी, गुलाल, पिचकारी, गुजियां, होली पर कैसे बनाएं पकवानहोलिका दहन में कूड़ा-कचरा और प्लास्टिक कचरे का इस्तेमाल बिलकुल ना करें. हरिद्वार के याज्ञवल्य केंद्र में हवन, हवन सामग्री और उसके विभिन्न पहलुओं पर शोध कर रहे शोधकर्ताओं ने बताया कि अगर होलिका दहन से स्वास्थ्य व पर्यावरण को फायदा पहुंचाना है तो हमें कुछ चीजों का विशेष ध्यान रखना चाहिए. एक शोधकर्ता डॉ. देवाशीष गिरी ने बताया सबसे पहले तो अगर आपके आसपास तैयार की जा रही होली में कूड़ा-कचरा, प्लास्टिक कचरा, हरे पेड़ों का इस्तेमाल किया जा रहा है तो ये गलत है. अगर आप होली में नीम या आम या अरंडी या अन्य औषधियों के पेड़ की लकड़ी और गाय के गोबर से बने उपलों के साथ हवन में इस्तेमाल होने वाली विभिन्न औषधीय सामग्री का इस्तेमाल करते हैं तो ये पर्यावरण के लिए फायदेमंद होगा. उनके मुताबिक, आम, नीम और अरंडी की लकड़ी जलाने पर वॉलेटाइल ऑयल्स निकलते हैं, जो हवा में मिलकर पर्यावरण को फायदा पहुंचाते हैं. शोधकर्ताओं ने बताया कि उनके शोध केंद्र में 1979 से हवन के विभिन्न पहलुओं पर शोधकार्य चल रहा है. वहीं, 2002 से हवन में इस्तेमाल होने वाली औषधीय सामग्रियों पर शोध शुरू हुआ. अब 30 तरह की अलग-अलग सामग्रियों का घर में हवन कर डायबिटीज समेत दर्जनों बीमारियों का इलाज किया जाता है. उन्होंने बताया कि मरीज बताई गई औषधी से नियमित अपने घर में हवन करते हैं. इससे औषधीय धूम्र उनके श्वसनतंत्र के जरिये शरीर में पहुंचता है और फायदा पहुंचाता है. उनका कहना है कि जब हम किसी मरीज को कोई औषधी खाने के लिए देते हैं तो उसे पचाने में वक्त और ऊर्जा दोनों लगती हैं. वहीं, धूम्र के जरिये औषधी शरीर में पहुंचकर तेजी से फायदा पहुंचाती है. ऐसे में अगर होली में आम, नीम या अरंडी की लकड़ी के साथ औषधीय सामग्री को जलाया जाएगा तो निश्चित तौर पर एकसाथ काफी लोगों को उसका फायदा मिलेगा.

अब गणितीय मॉडल से मिलेगी पर्यावरण एवं संक्रामक रोगों के प्रभावों की सटीक जानकारी

ग्वालियर जीवन एक गणित है या यूं कहिए कि गणित के बिना जीवन की परिकल्पना करना संभव ही नहीं है. मनुष्य द्वारा किए जाने वाले सभी कार्य में कहीं ना कहीं गणित शामिल होता है. चलने, उठने, बैठने, यहां तक की भोजन के संतुलन में भी गणित का विशेष महत्व होता है. इन्हीं सब आधारों को शोध के माध्यम से जीवाजी यूनिवर्सिटी के गणित विभाग के छात्रों ने प्रोफेसर ओपी मिश्रा के मार्गदर्शन में गणितीय मॉडलिंग की है.जिसके माध्यम से पर्यावरण एवं संक्रामक रोगों की भविष्य में होने वाले प्रभाव का पता किया जा सकेगा.

प्रोफेसर ओपी मिश्रा ने बताया औद्योगिकरण, वन कटाई, वायु प्रदूषण जल प्रदूषण, आदि मानव गतिविधियों का विभिन्न प्राणियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा.कौन सा प्राणी रहेगा और कौन सा समाप्त हो जाएगा मानव गतिविधियों से संक्रामक बीमारी कैसे जनसंख्या में फैले और इसे कैसे नियंत्रण कर सकते हैं.

इन सभी बातों का पता गणितीय मॉडलिंग के माध्यम से किया जा सकता है. जिसके विषय में छात्रों द्वारा विशेष शोध पत्र भी तैयार किए गए हैं. उन्होंने बताया कि वैक्सीनेशन टेस्टिंग कितने लोगों पर की जानी चाहिए और कम लागत पर कैसे इसे तैयार कर सकते हैं.इसके माध्यम से जो रिप्रोडक्शन नंबर निकाला जाएगा. उससे यह पता लगाया जा सकता है कि संक्रामक बीमारी कितनी तेजी से जनसंख्या को अपनी चपेट में लेगी.

ऐसे होती है रिप्रोडेक्शन नंबर की गणना

प्रोफेसर मिश्रा ने बताया कि रिप्रोडक्शन नंबर की गणना रोग संबंधी पैरामीटर के द्वारा की जाती है एवं जल संबंधी, प्रदूषण से होने वाली बीमारियां जैसे कालरा, मलेरिया के बारे में भी इस प्रोडक्शन नंबर के माध्यम से पता लगा सकते हैं और संक्रमित रोगों को फैलने से कैसे रोकना है.

इसका उपयोग किस प्रकार करना है और इसे कैसे नियंत्रित कर सकते हैं. यह सभी हमें रीप्रोडक्शन नंबर के माध्यम से पता चलता है. उन्हें बताया कि रिप्रोडक्शन नंबर 1 से कम है. तो संक्रमण धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा. लेकिन यदि एक से ज्यादा है तो संक्रमण तेजी से फैलेगा.

ऐसे किया जाता है इसका उपयोग

प्रोफेसर मिश्रा ने बताया कि रिप्रोडक्शन नंबर को नियंत्रित करने के लिए मैथमेटिकल नंबर का उपयोग किया जाता है. इसी के माध्यम से हम यह पता लगा सकते हैं कि कौन-कौन उपाय से इसे नियंत्रित किया जा सकता है. जिनसे हमारा इकोसिस्टम भी संरक्षित रह सके और संक्रामक रोग को फैलने से रोका जा सके.

प्रोफेसर मिश्रा ने बताया कि मैथमेटिकल मॉडलिंग का उपयोग संक्रामक रोगों की समस्याओं को कम करने तथा उन्हें रोकने में भी इस मॉडल का उपयोग हम कर सकते हैं. प्रोफेसर मिश्रा ने बताया कि भविष्य में एक निश्चित क्लाइमेट में किस प्रकार से और कौन सा जीव उस क्लाइमेट को टैकल कर सरवाइव कर पाएगा. इस संबंध में भी शोध पत्र तैयार करग्राफ के माध्यम से प्रदर्शित किए गए हैं.

प्रदूषण के कारणों की पड़ताल केवल कोयले तक ही सीमित क्यों?

जलवायु परिवर्तन पर जब भी बात होती है तो आखिर कोयला ही क्यों निशाने पर आता है? कोयले की तरह ही प्राकृतिक गैस भी एक जीवाश्म ईंधन है, जो गैस उत्सर्जित करती है और वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी का कारण बनती है। मगर इसकी चर्चा कोई क्यों नहीं करता? मैं समझ रही हूं कि यह प्रश्न असहज है मगर इसका उत्तर जानना भी आवश्यक है। मैं इस बात की गंभीरता समझती हूं कि कार्बन डाईऑक्साइड गैस का उत्सर्जन कम करना जरूरी है। मगर हम जो कुछ भी कर रहे हैं उन्हें लेकर सभी बिंदुओं पर स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए। पर्यावरणविद् होने के नाते मैं भली-भांति समझती हूं कि कोयले का इस्तेमाल ठीक नहीं है और इससे वातावरण में जो धुआं उठता है वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कोयले का इस्तेमाल इस वजह से भी अच्छा नहीं माना जा सकता क्योंकि हजारों लघु एवं मझोली औद्योगिक इकाइयों में यह जलाया जाता है जहां प्रदूषण नियंत्रित करना महंगा है या इससे होने वाले प्रदूषण पर नजर रखना मुश्किल होता है। इसके अलावा ताप विद्युत संयंत्रों में भी कोयले का इस्तेमाल होता है। इससे स्थानीय स्तर पर प्रदूषण फैलता है। कई ताप विद्युत संयंत्र पुराने हैं और इन्हें नया रूप देना संभव नहीं है। इनमें ऐसी तकनीकी उपकरण नहीं लगाए जा सकते हैं जो पार्टिक्यूलेट मैटर (पीएम), सल्फर डाईऑक्साइड या नाइट्रोजन ऑक्साइड आदि का उत्सर्जन नियंत्रित करते हैं। यही कारण है कि वायु प्रदूषण रोकने के लिए दिल्ली में कोयले का इस्तेमाल प्रतिबंधित कर दिया गया है। राष्ट्रीय राजधानी में पुराने पड़ चुके कोयला आधारित ताप विद्युत संयंत्र बंद कर दिए गए हैं। दिल्ली के 100 किलोमीटर के दायरे में कोयले का इस्तेमाल रोक दिया गया है। ईंधन के रूप में कोयले का इस्तेमाल करने वाले सभी भट्ठियों को प्राकृतिक गैस या अन्य स्वच्छ ऊर्जा का इस्तेमाल करने के लिए कहा गया है। ऐसा नहीं करने पर इन्हें बंद किया जा सकता है। मूल लक्ष्य उद्योगों और वाहनों को ऊर्जा के स्रोत के रूप में बिजली के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करना है। यह बिजली अक्षय ऊर्जा के स्रोतों से पैदा की जाएगी। हालांकि अंतरिम अवधि में प्राकृतिक गैस का इस्तेमाल एक विकल्प है। कोयले की तुलना में इसके इस्तेमाल से वायु कम प्रदूषित होती है। अब दिक्कत यह है कि प्राकृतिक गैस के दाम बढ़ गए हैं। यूक्रेन संकट और यूरोप में ऊर्जा के स्रोत के रूप में प्राकृतिक गैस की जरूरत दोनों आंशिक रूप से दाम में बढ़ोतरी के लिए उत्तरदायी हैं। इस समय यूरोप में प्राकृतिक गैस की मांग बढ़ गई है जिससे इसकी उपलब्धता प्रभावित हुई है। इसका सीधा असर भारत में स्वच्छ ऊर्जा की तरफ बढ़ने के प्रयासों पर हो रहा है। मैं कोयले के इस्तेमाल की पक्षधर नहीं हूं मगर मेरा प्रश्न फिर भी कोयला बनाम प्राकृतिक गैस के इर्द-गिर्द है क्योंकि स्थानीय और वैश्विक प्रदूषण का विज्ञान एक जैसा नहीं है। कोयला जलाने पर जितनी मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड और मीथेन गैस निकलती है उनका आधा प्राकृतिक गैस के इस्तेमाल से उत्सर्जित होता है। ये स्थानीय स्तर पर प्रदूषण फैलाने वाले नहीं हैं। ये लंबे समय तक वातावरण में अपना अस्तित्व बनाए रह सकते हैं जिससे वैश्विक तापमान बढ़ता है। कार्बन डाईऑक्साइड और मीथेन दोनों के प्रबंधन के दो तरीके हो सकते हैं। पहली तकनीक के तहत ईंधन के रूप में कोयले और प्राकृतिक गैस की क्षमता बढ़ाई जा सकती है या अक्षय ऊर्जा की तरफ कदम बढ़ाया जा सकता है। दूसरी तकनीक के तहत इन दोनों ईंधन का इस्तेमाल जारी रखा जा सकता है मगर कार्बन डाईऑक्साइड गैस का भूमिगत भंडारण करना होगा। प्राकृतिक गैस के मामले में मीथेन गैस का भंडारण सावधानीपूर्वक करना होगा और वातावरण में इसका स्राव रोकना होगा। मैं इसलिए यह कह रही हूं ताकि हम स्थानीय और वैश्विक प्रदूषण में अंतर करने की जरूरत समझ सकें और दोनों को एक साथ जोड़कर नहीं देखें। जलवायु परिवर्तन के लिहाज से कोयला और प्राकृतिक गैस दोनों ही खराब हैं।

अंटार्कटिक समुद्री बर्फ का आवरण रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचा, बढ़ेगी गर्मी

न्यूजर्सी। यूरोपीय संघ की जलवायु निगरानी सेवा के मुताबिक अंटार्कटिका में समुद्री बर्फ लगातार दूसरे वर्ष फरवरी में रिकॉर्ड पर सबसे छोटे इलाके तक सीमित हो गई है। समुद्री बर्फ के क्षेत्र में पिछले एक दशक से लगातार गिरावट देखी जा रही है।

कोपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) के आंकड़ों के अनुसार, 16 फरवरी को, जमे हुए महाद्वीप के चारों ओर बर्फ से ढकी समुद्र की सतह 20.9 लाख वर्ग किलोमीटर तक सिकुड़ गई, जो उपग्रह रिकॉर्ड शुरू होने के बाद से सबसे निचला स्तर है। सी3एस के उप निदेशक सामंथा बर्गेस ने कहा, 45 साल के उपग्रह से लिए गए आंकड़ों के रिकॉर्ड में अंटार्कटिक समुद्री बर्फ अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने भी पिछले महीने एक नए रिकॉर्ड की पुष्टि की थी, लेकिन यह 17.9 लाख वर्ग किमी के कम होना बताया है, एक अंतर जो कोपरनिकस ने विभिन्न समुद्री बर्फ के फिर से हासिल करने के लिए एल्गोरिदम को जिम्मेदार ठहराया है। दक्षिणी गोलार्ध की गर्मियों के दौरान समुद्र की बर्फ की मात्रा दक्षिणी महासागर के सभी क्षेत्रों में औसत से काफी नीचे थी। चौंकाने वाली बात यह है कि इस साल और 2022 में रिकॉर्ड गिरावट 1981 से 2010 के औसत से लगभग 30 प्रतिशत कम है। बर्गेस ने कहा, इन कम समुद्री-बर्फ वाली परिस्थितियों का अंटार्कटिक बर्फ के हिस्सों की स्थिरता और अंततः दुनिया भर में समुद्र के स्तर में वृद्धि के लिए अहम प्रभाव हो सकता है। ध्रुवीय बर्फ के हिस्से जलवायु संकट का एक अहम संवेदनशील संकेत हैं।

उन्होंने कहा, समुद्री बर्फ के पिघलने का समुद्र के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि बर्फ पहले से ही समुद्र के पानी में है। लेकिन बर्फ का कम होना एक प्रमुख चिंता का विषय है क्योंकि यह आर्कटिक क्षेत्र सहित ग्लोबल वार्मिंग में तेजी लाने में मदद करता है। सफेद समुद्री बर्फ से टकराने वाली सूर्य की लगभग 90 प्रतिशत ऊर्जा वापस अंतरिक्ष में परावर्तित हो जाती है। लेकिन जब सूरज की रोशनी गहरे, बिना जमे हुए समुद्र के पानी से टकराती है, तो उस ऊर्जा की लगभग उतनी ही मात्रा अवशोषित हो जाती है, जो सीधे तापमान बढ़ाने में योगदान देती है। उत्तरी और दक्षिणी दोनों ध्रुव क्षेत्र 19वीं सदी के उत्तरार्ध के स्तर की तुलना में लगभग तीन डिग्री सेल्सियस गर्म हुए हैं, जो वैश्विक औसत का तीन गुना है। लेकिन आर्कटिक में समुद्री बर्फ के विपरीत, जो 1970 के दशक के उत्तरार्ध से हर साल तीन प्रतिशत कम हो गया है, अंटार्कटिका में समुद्री बर्फ उसी अवधि में अपेक्षाकृत स्थिर रही है, यद्यपि साल में बड़े बदलाव देखे गए। अभी हाल तक पिछले आठ वर्षों में दक्षिणी महासागर में समुद्री बर्फ का कम से कम विस्तार 1991 से 2020 की अवधि के औसत से लगातार नीचे रहा है। अंटार्कटिका ने 2020 में अपनी पहली सबसे भयंकर लू या हीटवेव का सामना किया, तापमान जो अधिकतम औसत से 9.2 डिग्री सेल्सियस से ऊपर था। पिछले साल मार्च में, पूर्वी अंटार्कटिका के एक शोध केंद्र में तापमान सामान्य से 30 डिग्री अधिक दर्ज किया गया था।

बढ़ते तापमान की बात करें तो दुनिया भर में फरवरी 2023 पांचवां सबसे गर्म साल रहा। वहीं औसत तापमान पूर्वी अमेरिका, उत्तरी रूस, पाकिस्तान और भारत में ऊपर रहा।

इबेरियन प्रायद्वीप, तुर्की, पश्चिमी अमेरिका, कनाडा, पूर्वोत्तर रूस और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में तापमान औसत से कम रहा।

ऑस्ट्रल गर्मियों के दौरान हाल ही में बर्फ का आवरण पश्चिम अंटार्कटिका के आसपास सबसे ज्यादा कम हो गया है, जो कि पूर्वी अंटार्कटिका की तुलना में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील है।

2012 में आर्कटिक में रिकॉर्ड न्यूनतम समुद्री बर्फ का विस्तार 34 लाख वर्ग किलोमीटर हुआ, जो कि 2020 और 2019 में दूसरे और तीसरे सबसे कम बर्फ से ढके क्षेत्र था। 2021 में, संयुक्त राष्ट्र के आईपीसीसी जलवायु विज्ञान सलाहकार पैनल ने विश्वास के साथ पूर्वानुमान लगाया था की आर्कटिक महासागर सितंबर में कम से कम एक बार सदी के मध्य तक बिना बर्फ के रह जाएगा।

63 प्रतिशत महिलाएं कर रही हैं इंटरनेट का उपयोग

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का उत्सव मनाने वाला एक वैश्विक दिवस है। आठ मार्च का यह दिन दुनिया भर में लैंगिक असमानता के खिलाफ कार्रवाई करने के समर्थन में भी मनाया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि दुनिया महिलाओं के बिना नहीं चल सकती। यह उनके प्रयासों की सराहना करने का दिन है। यह भी सुनिश्चित करें कि आप अपने आस-पास की महिलाओं को दुनिया भर की महिलाओं के लिए उपलब्ध छात्रवृत्तियों पर संसाधनों को खोजने में मदद करें ताकि उन्हें अपने पंख फैलाने और ऊंची उड़ान भरने में मदद मिल सके। आज हमारा जीवन काफी हद तक तकनीकों पर निर्भर है, पाठ्यक्रम में भाग लेना, प्रियजनों को बुलाना, बैंक लेनदेन करना या चिकित्सा संबंधी बुकिंग करना। वर्तमान में सब कुछ एक डिजिटल प्रक्रिया का दौर चल रहा है। हालांकि, 37 फीसद महिलाएं इंटरनेट का इस्तेमाल नहीं करती हैं। पुरुषों की तुलना में 25.9 करोड़ में से कुछ ही महिलाओं की इंटरनेट तक पहुंच है, भले ही वे दुनिया की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। यदि महिलाएं इंटरनेट का उपयोग करने में असमर्थ हैं और ऑनलाइन सुरक्षित महसूस नहीं करती हैं, तो वे डिजिटल स्पेस में शामिल होने के लिए आवश्यक डिजिटल कौशल विकसित करने में असमर्थ हैं, जो विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) से संबंधित करियर बनाने के उनके अवसरों को कम कर देता है। 2050 तक, 75 फीसदी नौकरियां एसटीईएम क्षेत्रों से संबंधित होंगी। फिर भी आज, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में महिलाओं के पास सिर्फ 22 फीसदी पद हैं।

महिलाओं को प्रौद्योगिकी में लाने से अधिक रचनात्मक समाधान मिलते हैं और इसमें नवाचारों की अधिक संभावना होती है जो महिलाओं की जरूरतों को पूरा करते हैं और लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं। उनके समावेश की कमी, इसके विपरीत, बड़े पैमाने पर लागत के साथ आती है। सुसान बी एंथोनी एक राजनीतिक कार्यकर्ता और महिलाओं के अधिकारों की हिमायती थीं। गृहयुद्ध के बाद, उन्होंने 14वें संशोधन के लिए लड़ाई लड़ी, जिसका उद्देश्य सभी प्राकृतिक और मूल-निवासी अमेरिकियों को इस उम्मीद में नागरिकता प्रदान करना था कि इसमें मताधिकार के अधिकार शामिल होंगे। हालांकि 1868 में 14वें संशोधन की पुष्टि की गई थी, फिर भी यह उनके वोट को सुरक्षित नहीं कर पाया। 1869 में, महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई जारी रखने के लिए एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन और सुसान बी एंथोनी द्वारा नेशनल वुमन सफ़रेज एसोसिएशन (एनडब्ल्यूएसए) की स्थापना की गई थी।

छोटे शहरों में जानलेवा हुई हवा, उज्जैन में गंभीर स्तर पर पहुंचा सूचकांक

नई दिल्ली। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा 10 मार्च 2023 को जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के 196 शहरों में अगरतला (312), बर्नीहाट (319), डिंडीगुल (327) और नगांव (311) में वायु गुणवत्ता का स्तर बेहद खराब रहा। वहीं 11 शहरों में हवा बेहतर रही, जबकि 85 शहरों की श्रेणी संतोषजनक, वहीं 80 में मध्यम रही। वहीं 15 शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तरखराब दर्ज किया गया। वहीं उज्जैन में गुणवत्ता गंभीर स्तर पर पहुंच गई है जहां सूचकांक 500 दर्ज किया गया।

यदि दिल्ली-एनसीआर की बात करें तो यहां की वायु गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में है। दिल्ली में एयर क्वालिटी इंडेक्स 187 दर्ज किया गया है। दिल्ली के अलावा फरीदाबाद में एयर क्वालिटी इंडेक्स 140, गाजियाबाद में 134, गुरुग्राम में 174, नोएडा में 160, ग्रेटर नोएडा में 154 पर पहुंच गया है। देश के अन्य प्रमुख शहरों से जुड़े आंकड़ों को देखें तो मुंबई में वायु गुणवत्ता सूचकांक 145 दर्ज किया गया, जो प्रदूषण के मध्यम स्तर को दर्शाता है। जबकि लखनऊ में यह इंडेक्स 76, चेन्नई में 93, चंडीगढ़ में 155, हैदराबाद में 89, जयपुर में 140 और पटना में 158 दर्ज किया गया। देश के जिन 11 शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक 50 या उससे नीचे यानी बेहतर रहा, उनमें बागलकोट 46, चामराजनगर 43, चिक्कामगलुरु 45, दमोह 26, कोरबा 45, मदिकेरी 40, मैहर 46, नंदेसरी 44, सतना 36, वाराणसी 49 और विजयपुरा 45 शामिल रहे। वहीं आगरा, आइजोल, अजमेर, अमरावती, अनंतपुर, अंकलेश्वर, औरंगाबाद (बिहार), औरंगाबाद (महाराष्ट्र), बरेली, बठिंडा, बेंगलुरु, भिलाई, भोपाल, बीदर, बिहारशरीफ, बिलासपुर, ब्रजराजनगर, चंद्रपुर, चेंगलपट्टू, चेन्नई, चिकबलपुर, चित्तूर, दावनगेरे, देहरादून, एलूर, फिरोजाबाद, गडग, गांधीनगर, गंगटोक, गोरखपुर, हापुड़, हसन, हुबली, हैदराबाद, इंदौर, जबलपुर, झांसी, कडपा, कैथल, कलबुर्गी, कांचीपुरम, कानपुर, करनाल, काशीपुर, कटनी, खन्ना, कोल्लम, कोझिकोड, कुरुक्षेत्र, लखनऊ, मंडीखेड़ा, मैसूर, नागपुर, नाहरलगुन, नारनौल, नासिक, ऊटी, पाली, पलवल, पंचकुला, पटियाला, पीथमपुर, प्रयागराज, पुदुचेरी, रायपुर, रामनगर, रामनाथपुरम, ऋषिकेश, रोहतक, सागर, सलेम, सासाराम, शिवमोगा, सिंगरौली, शिवसागर, सूरत, तालचेर, तिरुवनंतपुरम, थूथुकुडी, तिरुपति, वेल्लोर, उदयपुर, वातवा, वृंदावन और यादगीर आदि 85 शहरों में हवा की गुणवत्ता संतोषजनक रही, जहां सूचकांक 51 से 100 के बीच दर्ज किया गया। देश में वायु प्रदूषण के स्तर और वायु गुणवत्ता की स्थिति को आप इस सूचकांक से समझ सकते हैं जिसके अनुसार यदि हवा साफ है तो उसे इंडेक्स में 0 से 50 के बीच दर्शाया जाता है। इसके बाद वायु गुणवत्ता के संतोषजनक होने की स्थिति तब होती है जब सूचकांक 51 से 100 के बीच होती है। इसी तरह 101-200 का मतलब है कि वायु प्रदूषण का स्तर माध्यम श्रेणी का है, जबकि 201 से 300 की बीच की स्थिति वायु गुणवत्ता की खराब स्थिति को दर्शाती है। वहीं यदि सूचकांक 301 से 400 के बीच दर्ज किया जाता है जैसा दिल्ली में अक्सर होता है तो वायु गुणवत्ता को बेहद खराब की श्रेणी में रखा जाता है। यह वो स्थिति है जब वायु प्रदूषण का यह स्तर स्वास्थ्य को गंभीर और लम्बे समय के लिए नुकसान पहुंचा सकता है। इसके बाद 401 से 500 की केटेगरी आती है जिसमें वायु गुणवत्ता की स्थिति गंभीर बन जाती है। ऐसी स्थिति होने पर वायु गुणवत्ता इतनी खराब हो जाती है कि वो स्वस्थ इंसान को भी नुकसान पहुंचा सकती है, जबकि पहले से ही बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए तो यह जानलेवा हो सकती है।

महिला दिवस पर विशेष

21 लाख महिलाओं का संगठन है सेवा

अहमदाबाद। छह फरवरी 2023 को अहमदाबाद स्थित देश के पहले स्वयं सहायाता समूह सेवा (सेल्फ एंप्लाइड वूमेन एसोसिएशन) की 50वीं वर्षगांठ का समारोह था। इस समारोह में अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन मुख्य मेहमान थीं। हिलेरी ने सेवा की नींव डालने वाली दिवंगत इला भट्ट को श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर विक्टोरिया गार्डन में बने स्मारक का उद्घाटन किया, जहां 12 अप्रैल, 1972 में सेवा की महिलाओं ने पहली मीटिंग की थी। इन 50 वर्षों में सेवा ने गुजरात की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए लंबा संघर्ष किया है। दूध क्रांति से लेकर नमक बनाने तक का काम सेवा द्वारा बनाई गई महिला मंडली करती हैं। शुरुआती समय में सेवा शहरी महिलाओं का संगठन था। लेकिन समय के साथ सेवा ने अपना रुख गांव की ओर किया। अब हालात ये हैं कि इस संस्था ने शहरों से अधिक ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में बड़ा योगदान दिया है। 1970 का साल दुग्ध क्रांति वाला वर्ष था। इस क्रांति का केंद्र गुजरात था जिसने भारत को विश्व में सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बना दिया। सहकारिता के माध्यम से पशुपालकों को डेरियों से जोड़ा गया। उस समय दूध क्रांति के बावजूद महिलाओं की भूमिका गोबर उठाने और दूध दुहने तक ही सीमित थी। 1972 में इलाबेन भट्ट ने महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए सेवा नाम से संस्था शुरू की। लेकिन यह संस्था शहरी महिलाओं तक ही सिमटी हुई थी। सेवा शुरुआत में शहरी क्षेत्रों में बीड़ी,अगरबती, पतंग, गारमेंट काम करने वाली महिलाओं के आर्थिक शोषण और अन्याय के खिलाफ काम करती थीं। 1980 में सेवा ने अपना विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में किया। गुजरात में ग्रामीण महिलाएं खेत मजूरी, दूध दूहना और गोबर पाथने का काम करती थीं। लोटा सिस्टम से ग्रामीणों से बिचौलिए दूध खरीदते थे। दूध को बराबर लीटर में नापते नहीं थे। दूध को डेरी तक पुरुष ही पहुंचाते थे। 1980 में सेवा ने महिलाओं की पहली मंडली बनाई थी। सविताबेन पटेल और कई अन्य महिलाओं ने सेवा की पहली मंडली को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पहली मंडली की वे अब अकेली सदस्य सेवा में कार्यरत हैं। वर्तमान में 74 वर्षीय सविताबेन पटेल सेवा की मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पद संभाल रही हैं। इसी के अंतर्गत हंसीबा शॉप आती है, जिसका वार्षिक टर्नओवर एक करोड़ का है। सविता बेन सेवा की स्थापना के समय से ही अहमदाबाद और गांधीनगर के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सहकारिता मंडल बनाने में बड़ी भूमिका निभाती रही हैं। सविता बेन बताती हैं, 80 के दशक में महिलाओं की मंडली बनाना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण काम था। उस समय महिलाएं बिना अपने घर के पुरुष के मिलती नहीं थीं। दिन में पुरुष खेत या अपने काम पर गया हुआ होता था। महिलाओं में विश्वास की कमी थी। इसलिए हम मंडली बनाने के लिए गांव की महिलाओं से पुरुषों की उपस्थिति में रात में मिलते थे। वह बताती हैं कि इसी का नतीजा था कि 1980 और 1984 के बीच अहमदाबाद और गांधीनगर जिले के ग्रामीण इलाकों की कई महिलाओं को मंडली में शामिल करने में सफलता मिली। उन्होंने बताया कि 1980 में पहली महिला सहकारी मंडली अहमदाबाद जिले की बावला तहसील के देव धोलेरा गांव में बनाई गई थी। गांव के नाम से ही मंडली का नाम धोलेरा महिला दूध उत्पादक सहकारी मंडली लिमिटेड रखा गया था। शुरुआत में इस मंडली में 50 महिलाएं थीं। बाद में इनकी संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई। सविता बेन ने बताया कि देव धोलेरा गांव की सफलता के बाद बलदाना, दुमाली, पेथापुर इत्यादि गांव की महिलाओं ने भी इसमें अपनी रुचि दिखाई और इसी का परिणाम था कि इन गांवों में भी सहकारी मंडली का गठन किया गया। यह ध्यान देने वाली बात है कि 1980 से 84 के बीच 15 रजिस्टर्ड महिला सहकारी मंडली बनाने में सफलता मिली। सविता बेन आगे बताती हैं कि महिलाओं की मंडली तो बनने लगी। लेकिन इसके बाद बहुत सी चुनौतियां सामने आ खड़ी हुईं। क्योंकि मंडली में ऐसी महिलाएं भी शामिल थीं, जिनके पास मवेशी ही नहीं थे, वे अब तक खेतों में मजदूरी किया करती थीं। यही कारण है कि इनके लिए हमने पशु खरीदने के लिए हम राष्ट्रीयकृत बैंकों में गए तो पहले बैंक को शंका होती कि महिलाएं लोन चुका पाएंगी या नहीं। हालांकि हमने 1974 में सेवा बैंक की स्थापना कर चुके थे। लेकिन सेवा बैंक शहरी बैंक था। उस समय नियमानुसार ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी बैंक लोन नहीं दे सकते थे। इसीलिए लोन के लिए कुछ राष्ट्रीकृत बैंक ही विकल्प थे। हमारी कोशिश से लोन के माध्यम से पशु खरीदकर खेतों में मजदूरी करने वाली महिलाएं भी मंडली से जुड़ने लगीं तो काम थोड़ा आसान हो गया। उस समय गावों के रास्ते ऐसे नहीं थे कि दूध का ट्रक गांव-गांव तक पहुंच जाए। ट्रक तक दूध पहुंचने के लिए ऊंट गाड़ी और बैल गाड़ी का उपयोग हुआ करता था। दूध नापने का पैमाना लोटा हुआ करता था, जिससे बिचौलिए फायदा उठाकर अधिक दूध ले लिया करते थे। हमने लोटा सिस्टम खत्म कर दूध को लीटर में बेचने का काम शुरू किया।

सविता बेन कहती हैं कि भारत में जातपांत हमेशा एक समस्या रही है। अनुसूचित जाति की महिलाओं के साथ उच्च जाति की महिलाएं काम करना नहीं चाहती थीं। अनुसूचित जाति की जो महिलाएं लोन से पशु खरीद लेती थीं। उस परिवार का बहिष्कार होता था और उन्हें गोबर पाथने तथा मजदूरी का काम नहीं देती थीं। कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा लेकिन फिर मजबूर होकर महिलाओं को बुलाना ही पड़ा। अधिक समय तक दलितों का बहिष्कार नहीं चला। सविता बेन एक घटना को साझा करते हुए कहती हैं कि दुमाली गांव में अनुसूचित जाति और क्षत्रिय जाति की आबादी लगभग बराबर थी। दुमाली गांव महिला दूध उत्पादक सहकारी मंडली की वार्षिक सामान्य मीटिंग थी। मीटिंग की अध्यक्षता अनुसूचित जाति की महिला को दी गई थी।

साभार- डाउन टू अर्थ

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादकः डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008